

## मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में यथार्थ बोध एवं शिल्प विधान

मोहिनी गुप्ता,  
डॉ राजेश कुमार शर्मा,  
डॉ. शिवानी शर्मा  
हिंदी विभाग, भगवंत यूनिवर्सिटी, अजमेर

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

### सारांश

मृदुला सिन्हा हिंदी साहित्य के आधुनिक धारा की एक सहज सजग साहित्यकार है। इन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक कुरीतियां, विसंगतियां, आधुनिकता बोध, यथार्थ बोध, मानवीय मूल्यों का विघटन मशीनी युग में उत्पन्न घुटन, कुंठा, अकेलापन तथा निराशा जैसी विकृतियों को चित्रित किया है। युगबोध के संदर्भ में स्थितियों का आकलन करते हुए यथार्थ को चित्रित किया है। अपनी धारणाओं के माध्यम से उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण का विकास किया है। शोध का मुख्य उद्देश्य मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में यथार्थ बोध के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करना, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में चेतना की दिशा और दशा देखना। मृदुला सिन्हा ने सामाजिक जीवन से जुड़े हुए नैतिक मूल्य में नवीनता लाने का प्रयास किया है।

**मुख्य शब्द:** सामाजिक कुरीतियां, विसंगतियां, आधुनिकता बोध, यथार्थ बोध, मानवीय मूल्यों का विघटन

### उपन्यासों में यथार्थ बोध एवं शिल्प विधान

आधुनिक साहित्य मानव जीवन की अनुभूतियों का साहित्य है जिसने सामाजिक संदर्भों से जुड़कर लगभग समाज के हर पक्षकोलेखनी के माध्यम से साहित्य जगत में लाने का प्रयास किया है। आधुनिक साहित्य विमर्श में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, विमर्श, आदिवासी विमर्श, ए असंख्य विमर्श, आदि सामने आते हैं इसमें से सबसे सशक्त स्त्री विमर्श है। स्त्री समाज का अंग होते हुए

भी समाज में कटी हुई है। साहित्य जगत में 21वीं सदी से ही स्त्री विमर्श पर चर्चाएं होने लगी थीं। समकालीन महिला लेकर गांव में मृदुला सिन्हा का स्थान उल्लेखनीय है। इन्हें सबसे तेज लेखिका मृदुला सिन्हा को देखा जा सकता है। इन्होंने स्त्री जीवन के सामाजिक आर्थिक एवं विभिन्न पक्षों से समाज में उनकी उपस्थिति दर्ज कराई है। हिंदी उपन्यासए कहानीए निबंधए विधाओं आदिमें प्रख्यात लेखिका मृदुला सिन्हा की अलग पहचान रही हैं। उन्होंने भारत के बदलते हुए परिवेश में महिलाओं के समक्ष उपस्थित सामाजिक धार्मिक मनोवैज्ञानिक ज्वलंत समस्याओं पर लिखा है। उनके लेखन में ग्रामीण समस्याओं तथा व्यक्ति पर होने वाले प्रभाव का गहरा प्रभाव पड़ता है। मृदुला सिन्हा ने अपने उपन्यासों कहानियों में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की मूल कड़ी को जोड़ा है तथा अपने साहित्य के माध्यम से समाज की समस्याओं को उठाया है।

मृदुला सिन्हा के अनुसार समाज एवं साहित्य का संबंध आदि काल से चला आ रहा है। साहित्यकार समाज का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें वह जन्म लेता है। साहित्य को समाज का आईना कहा जाता है। सामाजिक साहित्य अतीत एवं वर्तमान के संदर्भ में आत्म निरीक्षण की भी एक प्रक्रिया है।

साहित्य में मानव जीवन की अनुभूतियों का चित्रांकन होता है। जीवन कितना ही कठिन क्यों ना हो पर साहित्य में पहुंचकर सरल बन जाता है। साहित्यकार समाज का प्रतिनिधि होने के नाते अपने युग का दृष्टा भी है। प्रत्येक युग के साहित्य पर उस समय के वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है। प्रत्येक साहित्यकार के लेखन के पीछे अपना एक विशेष उद्देश्य होता है उसके साहित्य लेखन का उद्देश्य यह होता है कि उसने जो कुछ लिखा है जो लोग उसे पढ़ेंगे जिसे पढ़कर पाठक के मस्तिष्क में एक छाप छोड़ी जाएगी। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य भी मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य में विभिन्न आयामों को खोज कर उनका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना है।

रचना में सामाजिक जीवन से जुड़े हुए विभिन्न नैतिक मूल्य में नवीनता लाने का प्रयास किया है। लेखिका ने मानव को अपने अस्तित्व को लेकर पुरानी परंपराओं को जोड़ने की अपेक्षा जीवन का अर्थ खोजने का निश्चय कराना उद्देश्य माना है। उन्होंने ईमानदारी और सच्चाई के साथ योगदान करने की कोशिश की है।

मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में संस्कृति मानव जीवन की वह चेतना है जिसके आधार पर समाज अपनी भावी प्रगति का अनुकरण करता है। संस्कृति मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करती है।

मृदुला सिन्हा के विभिन्न उपन्यासों में विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट किया गया है जैसे ज्यो मेहंदी के रंग मृदुला सिन्हा का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक विकलांगों पर आधारित

है। इस उपन्यास में लेखिका ने विकलांगों की समस्याओं का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इसी तरह निरंतर परिवर्तित होते मानवीय मूल्यों का यथार्थ अंकन इस उपन्यास में हुआ है। अतिशय उपन्यास में आने वाले समय में भारत को विश्व गुरु बनाने की स्थितियों को किया गया है। इस उपन्यास का कथानक तीन पीढ़ियों की मनोवैज्ञानिक आर्थिक एवं पारिवारिक संघर्ष की कहानी है।

सीतापुर सीता की आत्मकथा है जिसमें सीता चरित्र को मस्तिष्क की टकसाल पर भी डाला है। इसमें इतिहास के सर्वोत्तम और सर्वशक्तिमान नारी के साथ साथ चलना उनकी स्मृतियों में डूबना किस तरह स्वर्गीय सुख तो था इसका वर्णन इस उपन्यास में दिखाई पड़ता है।

मृदुला सिन्हा ने उपन्यासों कथा साहित्य के अलावा लोक साहित्य पर भी लिखा है। मनुष्य जीवन के साथ-साथ पशु पक्षी पेड़ पौधे खेत खलियान के संबंधों को भी लोक कथाएं जीवंत चित्रण प्रदान करती है।

इस प्रकार में सिन्हा आधुनिक कथा कारों में एक चर्चित साहित्यकार है जिन्होंने जिंदगी की सच्चाईयों को बेबाकी से अभिव्यक्त किया।

समाज की तमाम विकृतियों, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक को अपनी कला का कसौटी माना, इनकी रचनाएं ना केवल समस्याओं से युक्त थी वरन समस्याओं के समाधान की ओर भी संकेत करती है। संयम बनाम भोग में संयम की स्थापना करती है।

### निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि मृदुला सिन्हा का रचना साहित्य हिंदी साहित्य जगत की अक्षय अमूल्य निधि है। प्रतिभा की धनी लेखिका मृदुला सिन्हा ने विभिन्न विषयों पर विचारों को व्यक्त किया है। उनकी रचना का असर मंथर गति से होता है लेकिन समाज के संस्कार बदलने का सामर्थ्य साहित्य में होता है, भले ही उसमें सालों साल लग जाए। साहित्य में युग बोध का महत्वपूर्ण स्थान होता है साहित्य में जो भी चेतना की उपज होती है उसमें युगबोध संश्लिष्ट होता है। चेतना अनुभूतियों की जननी होती है। साहित्य की आत्मा साहित्य चेतना के बिना प्राणरहित तथा युगबोध के बिना अंधा होता है। सामाजिक आयाम, आर्थिक आयाम, सांस्कृतिक आयाम, धार्मिक राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक सभी पक्षों पर युगबोध का महत्व है। सिन्हा के उपन्यासों में जीवन की समस्याओं को प्रमुखता से उजागर किया गया है। मृदुला सिन्हा ने अपने उपन्यास में इन समस्याओं के प्रति समाज का ध्यान आकर्षित किया है तथा इन समस्याओं को दूर करने के लिए समाज से पहल की है।

### संदर्भ सूची

- मृदुला सिन्हा, सीता पुणे बोली, दरियागंज नई दिल्ली 2007

- मृदुला सिन्हा,बिहार की लोक कथाएं, प्रकाशन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली 1982
- बिंदु अग्रवाल, हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण, राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 1950
- रामधारी सिंह दिनकर,संस्कृति के चार अध्याय, राजकमल एंड संस दिल्ली प्रकाशन 1956
- धीरेंद्र वर्मा,हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड बनारस 1993
- हिंदी साहित्य का संदर्भ प्रसंग 301
- मृदुला सिन्हा, अतिशय प्रतिष्ठा प्रतिभा प्रतिष्ठान,नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली 2003
- मृदुला सिन्हा,मात्र देहर नहीं है औरत ,सामयिक प्रकाशन नेताजी सुभाष दरियागंज नई दिल्ली 2009
- कृष्णाराणा ,हिंदी साहित्य विविध संदर्भ, विभूति प्रकाशन दिल्ली 1966
- मंगल देव,शास्त्री भारतीय संस्कृति का विकास,भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी 1964

## Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification / Designation/ Address of my university/ college /institution/ Structure or Formatting/ Resubmission/Submission/Copyright/Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit

the copy of my original documents(Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that As the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

मोहिनी गुप्ता,  
डॉ राजेश कुमार शर्मा,  
डॉ. शिवानी शर्मा

\*\*\*\*\*